



अर्वाङ्गिका कृषि अमृत



‘‘त्रैमासिक कृषि तकनीकी संचार दिग्दर्शिका’’

अंक-58

कृषि विज्ञान केन्द्र, रा.वि.सि.कृ.वि.वि, उज्जैन

जनवरी-मार्च 2023

संरक्षक

डॉ. ए.के. शुक्ला

कुलपति

रा.वि.रा.सि.कृ.वि.वि.ग्वालियर

मार्गदर्शक

डॉ. वाय.पी. सिंह

संचालक विस्तार सेवाएँ

रा.वि.रा.सि.कृ.वि.वि.ग्वालियर

*

डॉ. एस.आर.के. सिंह

निदेशक अटारी

भा.कृ.अ.परिषद, जोन-9, जबलपुर

*

प्रकाशक एवं मुख्य संपादक

डॉ. आर.पी. शर्मा

प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख



सह संपादक

डॉ. हंसराज जाटव

(वैज्ञानिक कृषि विस्तार)



तकनीकी सहयोग

डॉ. सुरेन्द्र कुमार कौशिक

(वरिष्ठ वैज्ञानिक पौध प्रजनन)

डॉ. श्रीमती रेखा तिवारी

(वरिष्ठ गृह वैज्ञानिक)

डॉ. दिवाकर सिंह तोमर

(वरिष्ठ वैज्ञानिक सस्य विज्ञान)

श्री डी.के. सूर्यवंशी

(वैज्ञानिक पौध संरक्षण)

डॉ. मोनी सिंह

(सहा. मुख्य तकनीकी अधि.)

श्रीमती गजाला खान

(वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी)

श्री राजेन्द्र गवली

(वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी)

संपादकीय...

प्राकृतिक खेती के उत्पादों में मूल्यसंवर्धन से आय में अपेक्षित वृद्धि...

ऐसा अनुमान है कि फलों एवं सब्जियों के उत्पादन का लगभग 30-40 प्रतिशत हिस्सा, तुड़ाई उपरांत कुप्रबंधन के कारण क्षतिग्रस्त हो जाता है। यदि फलों एवं सब्जियों का सही समय पर प्रसंस्करण करें तो तुड़ाई उपरांत क्षति तो कम होगी ही साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के असंख्य अवसर भी पैदा होंगे। इसके अतिरिक्त हमारे युवा फलों एवं सब्जियों के प्रसंस्करण को उद्यम के रूप में अपनाकर अपने क्षेत्रों में उद्योग लगाकर उन्नति के नए आयाम भी स्थापित कर सकते हैं। इससे न केवल किसान को आर्थिक लाभ होगा बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को सुधारने में काफी मदद भी मिलेगी।

धान्य व दलहनी फसलों की अपेक्षा फल व सब्जियां बहुत अधिक नाशवान प्रकृति की होती हैं। अधिकतर फलों व सब्जियों में 80 से 95 प्रतिशत तक पानी होता है एवं वे धान्य एवं दलहनी फसलों से भारी होती हैं। उनका गठन मुलायम व श्वसन क्रिया अधिक होने के कारण इन्हें ढुलाई एवं भंडारण के दौरान बहुत से सूक्ष्मजीव ग्रसित करते हैं, जो कई रोगों का कारण बन जाते हैं। ऐसे में इन कृषि उत्पादों से तमाम तरह के प्रसंस्करित मूल्यवर्द्धित उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं। जिसमें मुख्यतः जेम एवं मुरब्बा तैयार करना, फलों से पेय तैयार करना, आम के पापड़, फल स्कवैश, फल नेक्टर, आम की मीठी चटनी, टमाटर की सॉस, केचप, टमाटर का सूप, टमाटर का आचार व चटनी, अमचूर आदि पदार्थ तैयार किए जा सकते हैं। जो कि किसान भाईयों की आय को दोगुनी करने में सहायक सिद्ध होंगे।

फलों एवं सब्जियों के मूल्यसंवर्धन में निम्न सावधानियां बरते...

- * धब्बेदार, क्षतिग्रस्त या खाए हुए फलों और सब्जियों को सुखाने के काम में नहीं लाना चाहिए, क्योंकि इनपर जीवाणुओं का असर जल्दी होता है। प्रयोग में लाने से पहले इन्हें साफ पानी में धोएं।
- * धूप में सुखाते समय इन्हें चटाई, चारपाई या चादर पर फैलाकर ऊपर से बारीक मलमल का कपड़ा डाल देना चाहिए, जिससे इन्हें धूल, मक्खियों तथा कीटों से बचाया जा सके।
- * इन्हें समय-समय पर उलटते-पलटते रहना चाहिए, ताकि कोई भाग बिना सूखा न रह जाए।
- * सुखाए गए फलों और सब्जियों के भण्डारण में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

डॉ. आर.पी. शर्मा



मशरूम उत्पादन अतिरिक्ति आय का साधन

कृषि विज्ञान केन्द्र, उज्जैन द्वारा कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत मशरूम उत्पादन तकनीकी द्वारा ग्रामीण युवाओं की आजीविका सुरक्षा विषय पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 12 से 16 दिसम्बर 2022 तक डॉ. आर.पी.शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख के मार्गदर्शन में सफल आयोजन किया गया।

डॉ. आर.पी.शर्मा संस्था प्रमुख द्वारा स्वागत भाषण में कार्यक्रम आयोजन का उद्देश्य एवं युवाओं के लिये यह कार्यक्रम किस तरह स्वरोजगार का साधन हो सकता है के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी। डॉ. एच.आर. जाटव, वैज्ञानिक कृषि विस्तार द्वारा मशरूम के प्रकार, मशरूम उत्पादन तकनीकी प्रयोगिक कार्य जैसे मशरूम उत्पादन के लिये माध्यम तैयार करना, माध्यम में बीजाई करना (स्पान डालना) आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी, साथ ही संस्थान के पूर्व प्रशिक्षार्थी (सफल उद्यमी) श्री मोहन लाल राठोड, सुमराखेडा के मशरूम उत्पादन ईकाई का विडियो भी दिखाया गया। जिससे प्रसार शिक्षा के महत्वपूर्ण सिद्धांत "करके सीखो देखकर विश्वास करो" के आधार पर प्रतिभागी प्रशिक्षण में कौशल प्राप्त कर एक सफल उद्यमी बन सके। डॉ. डी.के. सुर्यवंशी वैज्ञानिक पौध संरक्षण द्वारा मशरूम में लगने वाले विभिन्न कीट एवं रोगों का जैविक तरीके से कैसे प्रबंधन किया जाए के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। डॉ. डी एस तोमर, सस्य वैज्ञानिक द्वारा मशरूम उत्पादन में सहयोगी संस्थान एवं मशरूम स्पॉन के स्रोत के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी। डॉ. रेखा तिवारी, गृह वैज्ञानिक द्वारा मशरूम में मूल्य संवर्धन कर कैसे मूल्य को बढ़ाया जाये के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी, साथ ही मशरूम में पाए जाने वाले विभिन्न पोषक तत्वों के बारे में भी बताया गया। डॉ. मोनी सिंह, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, गृह विज्ञान द्वारा मशरूम एवं मशरूम उत्पाद जैसे मसरूम अचार, मशरूम पापड़, मशरूम नगेटम, मशरूम चिप्स आदि उत्पादों को बनाने की विधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। श्रीमति गजाला खान, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, कम्प्यूटर साईंस द्वारा मशरूम उत्पादन पर वीडियो फिल्म दिखाई गई साथ ही मशरूम के ऑनलाईन मार्केटिंग के बारे में जानकारी दी गयी। श्री राजेन्द्र गवली, तकनीकी अधिकारी मृदा विज्ञान के द्वारा मशरूम की गुणवत्ता एवं विशेषता के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी।

इस कार्यक्रम में जिले के उज्जैन, तराना, घट्टिया, महिदपुर, एवं बड़नगर विकासखण्ड के 31 ग्रामीण युवाओं ने भाग लेकर मशरूम उत्पादन की तकनीकी के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की गई। कार्यक्रम को सफल बनाने में सपनासिंह, अजय गुप्ता का विशेष योगदान रहा।



महिला किसान दिवस का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, उज्जैन द्वारा संस्था प्रमुख डॉ. आर.पी.शर्मा के मार्गदर्शन में ग्राम देवराखेड़ी में महिला किसान दिवस का आयोजन किय गया। आयोजन के दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र की वैज्ञानिक डॉ. रेखा तिवारी ने ग्रामीण महिलाओं को महिला किसान दिवस की महत्ता समझाते हुए बताया कि कृषि में महिलाओं के सर्वांगीण योगदान को देखते हुए भारत सरकार द्वारा 15 अक्टूबर 2020 को महिला किसान दिवस मनाया जाना सुनिश्चित किया गया। चूंकि मालवा अंचल में 80 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं की खेती के कार्यों में सहभागिता है। डॉ. रेखा तिवारी द्वारा ग्रामीण महिलाओं को समझाईश दी कि वे कृषि संबंधित सभी जानकारियों को समझे व कृषि को कृषि एवं सामाजिक विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को सार्थक करें।

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए संस्था के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. एच.आर. जाटव ने ग्रामीण महिलाओं को कृषि में महत्वपूर्ण योगदान के लिए बधाई दी एवं उन्हें समझाईश कि वे कृषि की नवीन तकनीकी में जुड़े और कृषि कार्यों में अपनी सहभागिता को बढ़ाये। कृषि से जुड़े निर्णय के सभी चरणों में उनको भी बराबरी की हिस्सेदारी हो, जिसमें वे अपना सामाजिक आर्थिक स्तर उच्च कर सकें। किसान महिला किसान दिवस के आयोजन में संस्था की वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ. मौनी सिंह द्वारा ग्रामीण महिलाओं को उनकी दोहरी जिम्मेदारियों घर एवं कृषि दोनों को उत्तम तरीके से सुचारु रूप से चलाने के लिए सराहना की एवं आगे नयी कृषि तकनीकी सोचने संबंधी आग्रह किया।

आयोजन में कुल 24 लाभार्थी थे जिन्होंने संपूर्ण भागीदारी एवं उत्साह के साथ महिला किसान दिवस में भागीदारी की। आयोजन का संचालन डॉ. रेखा तिवारी एवं आभार डॉ. मौनी सिंह द्वारा किया गया।



विगत तीन माहों में सम्पन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अन्य प्रसार गतिविधियाँ

विवरण	संख्या	लाभान्वित
1. प्रशिक्षण कार्यक्रम		
* कृषक प्रशिक्षण (संस्था/असंस्थागत)	09	192
2. प्रसार गतिविधियाँ		
* वैज्ञानिक का खेतों पर भ्रमण	08	46
* किसानों का केन्द्र पर भ्रमण	68	648
* समाचार	11	MASS
* सी.डी.शो	08	268
* कृषक संगोष्ठी / प्राकृतिक खेती	01	315
* प्रक्षेत्र दिवस	01	101
* स्वच्छता पखवाड़ा	02	272
* किसान मेला / किसान दिवस	01	408

विश्व मृदा स्वास्थ्य दिवस का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र उज्जैन द्वारा संस्था प्रमुख डॉ. आर.पी. शर्मा के मार्गदर्शन में दिनांक 05 दिसम्बर 2022 में विश्व मृदा दिवस का आयोजन किया गया। संस्था प्रमुख डॉ. आर.पी. शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख द्वारा कार्यक्रम के आयोजन के बारे में मृदा स्वास्थ्य कार्ड की अवधारणा एवं उपयोगिता के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

श्री राजेन्द्र गवली, तकनीकी अधिकारी (मृदा विज्ञान) द्वारा कृषको को प्रायोगिक कार्य जैसे-मिट्टी का नमूना लेने की वैज्ञानिक विधि तत्पश्चात् सिद्धांत व प्रायोगिक जैसे, पी.एच., ई.सी., कार्बनिक पदार्थ नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटैश, सल्फर व सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रायोगिक विश्लेषण विभिन्न फसलों की अनुशंसा का प्रयोग किसान अपने खेतों पर वैज्ञानिक तरीके से उपयोग कर सकता है। साथ ही टिकाऊ खेती से अधिकतम आय कैसे प्राप्त की जाये, के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी, पोषक तत्व प्रबंधन द्वारा कीट एवं रोगों का प्रबंधन कैसे किया जाये, के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। कार्यक्रम के आरम्भ में भारतीय कृषि अनुसंधान केन्द्र द्वारा आयोजित विश्व मृदा दिवस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कृषकों को दिखाया गया।

तकनीकी सत्र में डॉ. डी.एस. तोमर वैज्ञानिक (शस्य विज्ञान) द्वारा मृदा जीवन्ता व मृदा जैव विविधता की सुरक्षा शस्य तकनीकी के माध्यम से कर सकते हैं। मृदा जीवन्ता में उन्नतशील प्रजातियों का उपयोग के बारे में किसानों को समझाइश दी। डॉ. एच.आर.जाटव, वैज्ञानिक (कृषि प्रसार) द्वारा युवाओं का मृदा स्वास्थ्य कार्ड के प्रति मनोवृत्ति एवं उपयोगिता के बारे में चर्चा करते हुये खेती में वैज्ञानिक अनुशंसा का पालन करने के बारे में बताया। साथ ही खाद व उर्वरकों की क्षमता में वृद्धि हेतु फार्म मशीनरी द्वारा उपयोग की एवं खेती में कृषि यंत्रीकरण की उपयोगिता के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी।

कार्यक्रम को सफल बनाने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से डॉ. डी.के. सूर्यवंशी, डॉ. मौनी सिंह, श्रीमती गजाला खान, श्री अजय गुप्ता, श्रीमती सपना सिंह का सहयोगात्मक सहयोग रहा।

इस कार्यक्रम में 4 अधिकारियों ने एवं ग्राम खाण्डाखेडी, रनाहेड़ा एवं अन्य के 65 कृषको द्वारा भागीदारी की गयी। साथ ही कृषको द्वारा मृदा स्वास्थ्य कार्ड के प्रति मनोवृत्ति एवं उपयोगिता में सहयोग प्रदान करने के बारे में प्रतिक्रिया दी गयी।



अत्यधिक सर्दी एवं पाले से फसलों एवं पौधों का बचाव

1. सिंचाई करने से खेत का तापमान 0.5° सेंटीग्रेड से 2° सेन्टीग्रेड तक बढ़ जाता है। पाले की सम्भावनाओं को देख खेत को सिर्फ इतना सिंचित करें कि मिट्टी गिली रहे बहुत अधिक या कम पानी ना दें।
2. डाईमिथाइल सल्फोऑक्साइड 78 एम.एल/1000 लीटर प्रति हेक्टे. का उपयोग करने से भी पाले से बचा जा सकता है
3. धुआँ द्वारा :- खेतों या बगीचों 6 से 8 जगह धुआँ हेतु नम घास या टहानियों को इस तरह जलाये कि धुआँ खेतों पर पर्त के रूप में छा जाये जिसकी वजह से वातावरण के ताप में 5° सेन्टीग्रेड अन्तर आ जाता है धुआँ करने के लिए इंजन ऑयल या टायर का उपयोग कर सकते हैं आधी रात्रि के बाद यह कार्य करे तो ज्यादा अच्छा होगा।
5. सूर्य निकलने से पूर्व गुन-गुने पानी का स्प्रे करें तो पाले से होने वाली क्षति को कम किया जा सकता है।
6. आम, नींबू, अनार, बेर, सीताफल के पौधे को घासफूस ज्वार की कडवी की टहनियों से ढंके।
7. घुलनशील सल्फर 0.4 प्रतिशत एवं घुलनशील बोरान 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करें।

वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति की बैठक

वैज्ञानिक सलाहाकार समिति बैठक का आयोजन दि. 31 अक्टूबर 2022 को केन्द्र पर अध्यक्षता डॉ. बी.एस. चौधरी, अधिष्ठाता रा.वि.सि. कृषि महाविद्यालय, इंदौर द्वारा की गई। बैठक में डॉ. आर.पी.एस. नायक (उपसंचालक कृषि), श्री नरेश मीणा (सहा.संचालक कृषि) बीज प्रमाणीकरण, पशु चिकित्सा एवं प्रगतिशील कृषक सहित कुल 35 सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम में डॉ. आर.पी. शर्मा संस्था प्रमुख द्वारा उपस्थित सभी महानुभवों का स्वागत करते हुए संचालित विभिन्न गतिविधियाँ जैसे प्रथम पंक्ति प्रदर्शन, प्रक्षेत्र परीक्षण, प्रसार एवं प्रशिक्षण के बारे में विस्तृत जानकारी दी। डॉ. डी.एस. तोमर द्वारा विगत छः माह का प्रगति प्रतिवेदन एवं छः माह में किए जाने वाले प्रस्तावित कार्यक्रमों का पॉवरपॉइंट द्वारा प्रस्तुतिकरण किया गया।

कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. मोनी सिंह (सहा. मुख्य तकनीकी अधिकारी) द्वारा किया गया। डॉ. रेखा तिवारी द्वारा आभार व्यक्त किया गया। डॉ. एस.के. कौशिक वैज्ञानिक (पौध प्रजनन), डॉ. रेखा तिवारी एवं डॉ. डी.के. सूर्यवंशी द्वारा रिपोर्ट ईयर कार्य किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रीमती गजाला खान (वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी), श्री राजेन्द्र गवली (वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी), श्रीमती सपना सिंह (कम्प्यूटर ऑपरेटर), श्री अजय गुप्ता (कार्यालय अधीक्षक सह लेखापाल), श्री राजेश वर्मा (वाहन चालक) एवं केन्द्र के समस्त कर्मचारियों का योगदान रहा।



ग्रीष्म कालीन मूंग की उन्नत खेती

भूमि तैयारी :- रबी की फसलों के काटने के तुरंत बाद खेत की जुताई कर 4-5 दिन छोड़ दें। तत्पश्चात् पलेवा कर के कल्टीवेटर से 2 बार जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा बना लें। इससे नमी भी संरक्षित होगी।

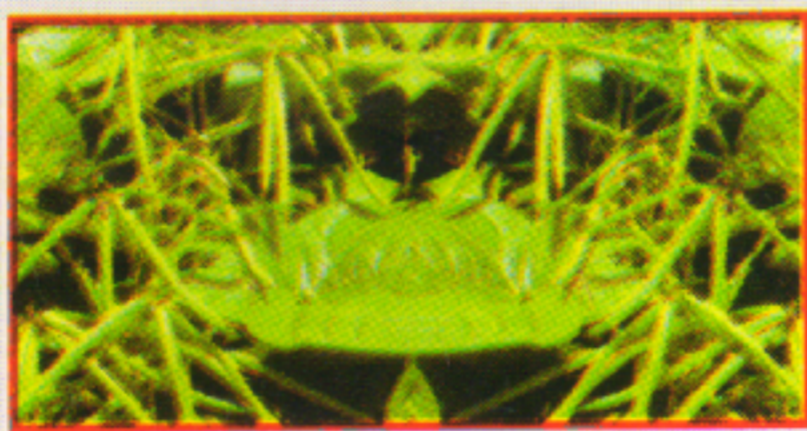
बुवाई :- उज्जैन तथा सम्पूर्ण मालवा में मौसम एवं पानी की उपलब्धता को देखते हुए फरवरी के प्रथम सप्ताह से 15 मार्च तथा मूंग की बोनी कर देना चाहिए। ताकि खरीफ की प्रमुख फसल सोयाबीन की बोनी प्रभावित होगी।

किस्में :- टी.जे.एन.-3, एचयूएम-16, एचयूएम-1, पी.डी.एम.-11, पुषा विशाल आदि प्रमुख उन्नत किस्में हैं।

बीजदर :- ग्रीष्मकालीन मूंग 25-30 कि.ग्रा./लीटर लेना चाहिए तथा 20-25 से.मी. कतार से कतार तथा पौधे-पौधे की दूरी 8-10 से.मी. रखना चाहिए। बीज 4-5 से.मी. गहरा बोएँ।

उर्वक :-

N = 20 S = 25
P = 40 ZN = 20 कि.ग्रा./हेक्ट.
K = 20



सिंचाई :- 15 दिन के अंतराल पर पलेवा के बाद 3-4 सिंचाई मौसम अनुसार देना आवश्यक है।

खरपतवार नियंत्रण :-

खरपतवारनाशी	सक्रिय तत्व	समय
1. पेण्डीमिथिलिन	700 ग्रा./हेक्ट.	0-3 दिन के अंदर
2. इमिजाथायपर	100 ग्रा./हेक्ट.	बुवाई के 20 दिन बाद
3. क्यूजोफाफ इथाइल	40-50 ग्रा./हेक्ट.	15-20 दिन बाद

प्रमुख रोग :- पीला मोजेक, सर्कोस्पोरा पर्णदाग, एन्थ्राक्नोज एवं भभूतियाँ प्रमुख रोग हैं।

नियंत्रण :- बीज उपचार एवं 2-3 वर्ष फसल चक्र अपनायें। प्रमाणित व अनुशंसित किस्म, विषाणुवाहक के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 250 डब्ल्यू.जी., 2 ग्राम/लीटर या ट्राइजोफॉस 2 मि.ली./लीटर का प्रयोग करें। भभूतियाँ रोग की रोकथाम हेतु सल्फर पाउडर 2.5 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें।

फफूंदजनित रोगों की रोकथाम हेतु मेन्कोजेब + कार्बनडाजिम 2.5 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें।

फसल की कटाई एवं मड़ाई :- जब फलियां अच्छी तरह पक जाये तो फलियों की तुड़ाई की जानी चाहिए। इसके साथ पकने वाली किस्में लगाना चाहिए। फलियों की तुड़ाई के बाद अच्छी तरह से सुखाकर मड़ाई करें।

उपज :- अच्छी तरह से प्रबंधन की गई फसल से 12-15 क्वि. दानों की उपज प्राप्त कर सकते हैं।

जनवरी माह में किए जाने वाले कार्य

- * सरसों में माहु कीट का प्रकोप होने पर डाईमिथोइट 1.5 मिली. को एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- * एक सिंचाई उपलब्ध होने की दशा में दलहन फसलों में फूल आने के पूर्व सिंचाई करें।
- * गुलाब में इस समय खाद देना चाहिए जिसमें बसंत ऋतु में अच्छे फूल आ सके।
- * सरसों व मटर की फसल में दाना बनते समय सिंचाई का विशेष ध्यान रखें।
- * **गेहूँ की फसल में सिंचाई के समय शेष यूरिया की मात्रा का प्रयोग करें।**
- * गेहूँ की फसल में जिंक की कमी के लक्षण ऊपरी पत्तियों में दिखाई देने पर 0.5% जिंक सल्फेट के घोल का पर्णीय छिड़काव करें।

फरवरी माह में किए जाने वाले कार्य

- * गेहूँ फसल में कन्से तथा गांठ बनने की अवस्था में सिंचाई करें।
- * हरे चारे (बरसीम या लुसर्न) को सुखाकर 'हे' तैयार करें।
- * **नर्सरी तैयार करते समय भूमि एवं बीजों को फफूंदनाशक कार्बोन्डिजम/थायरम+कार्बोक्जिल/ट्रायकोडर्मा बिरडी से उपचारित करें।**
- * मिर्च के फसल की नर्सरी तैयार करें।
- * ग्रीष्मकालीन मूंग/तिल की बुवाई करें। मूंग में पिला मोजेक निरोधक जातियों का प्रयोग करें।
- * आलू में पछेती अंगमारी रोग आने पर मेटालेक्जिल 2.5 ग्राम दवा **एक लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।**
- * ग्रीष्म कालीन मौसमी पुष्पों के पौधों की रोपाई करें।
- * फल वृक्षों की सूखी टहनियों को काटकर जला दे तथा कटे स्थान पर फफूंदनाशक दवा का पेस्ट लगा दें।

मार्च माह में किए जाने वाले कार्य

- * भण्डारण में नमी 12% से ज्यादा नहीं रहे।
- * फसल कटने के बाद यदि खेत में नमी हो तो खाली खेत की जुताई करें।
- * गेहूँ, चना, मटर आदि फसलों के गुणवत्तायुक्त बीज प्राप्त करने हेतु आंखनीय पौधों को बाहर निकाल दें।
- * बैंगम मिर्च की ग्रीष्मकालीन फसल हेतु नर्सरी की तैयारी अवश्य सुनिश्चित कर लें।
- * पशुओं को कृमिनाशक दवा अवश्य पिलाएं एवं दुधारू पशुओं को केलिशियम एवं खनिज मिश्रण का प्रयोग करें।
- * पशुओं के खुरपका मुँहपका रोग के टीके लगवाएँ।
- * एमपी चरी की बुवाई करें।

संपर्क सूत्र-कृषि विज्ञान केन्द्र रा.वि.रा.सि.कृ.वि.वि.

विक्रम नगर रेलवे स्टेशन के सामने, उज्जैन (म.प्र.) 0734-2526976

बुक-पोस्ट

प्रेषक :

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख

कृषि विज्ञान केन्द्र, विक्रम नगर रेलवे स्टेशन के सामने,

उज्जैन (म.प्र.) 465 010

प्रति,

